Daily Gospel Reflections in Hindi

13 July 2019

मारकूस 12:38-44

THE POOR WIDOW'S OFFERING

आज के सुसमाचार पाठ के दो भाग है– पहले भाग में प्रभु यहूदी धार्मिक नेताओं को कोसते है और दूसरे भाग में प्रभु विधवा के चढ़ावे का सम्मान करते है। ये दोनों भाग अलग–थलग दिखते जरूर है, लेकिन वास्तव में एक ही संदेश देते है–सच्ची श्रद्धा। मंदिर में वेदी के सामने की दान–पेटी में जो भी चढ़ावा आता था उससे मंदिर की मरम्मत के सामान और मरम्मत के कारीगरों का वेतन के लिए खर्च किया जा सकता था। अन्य किसी भी कार्य के लिए वो पैसा नहीं लिया जा सकता था (2King 12:10ff)। जबकि जुर्माने की राशि और प्रायश्चित का चढ़ावा मंदिर के अंदर नहीं, बल्कि सीधे पुरोहितों को दिया जाता था। पुरोहितों और वेदी, सेवकों का गुजारा उससे होता था। (2King 12:17)। प्रभु इल्जाम लगाते है कि शास्त्री लोग विधवाओं की सम्पत्ति चट कर जाते है। यहां उल्लेख नबी आमोस की भर्त्सनाओं पर है। ''तुम जो दीन–हीन को रौंदते हो, और देश के गरीबों को समाप्त कर देना चाहते हो'' (Amos 8:4) ''वे चांदी के सिक्कों से निर्दोष को बेचते है और जूतों की जोड़ी के दाम कंगाल को'' (Amos 2:6) ''वे ईश्वर के मंदिर में जुर्माने के पैसे से खरीदी हुई मदिरा पीते है'' (Amos 2:8)। मतलब साफ है– धार्मिक पतन। पुरोहित वर्ग, फरीसी, सदूकी और शास्त्रियों का काम था– लोगों का पथ प्रदर्शन। लेकिन वे स्वयं अधार्मिक हो चुके थे। ''वे अंधों से अंधे पथ प्रदर्शक है'' (Mt 15:14)। नबी अमोस कहते है–''मैं तुम्हारे पर्वों से बैर और घृणा करता हूँ। तुम्हारे धार्मिक समारोह मुझे नहीं सुहाते (Amos 5:21)। लम्बे लबादे पहनना, सभा गृहों में प्रथम आसनों पर विराजमान होना आदि से प्रभु प्रसन्न नहीं होते है (Mk 12:39)। बल्कि ईश्वर अपने हृदय को देखते है। (1Sam.16:7)। ''तुम्हारे द्वारा चढ़ाये हुए मोटे पशुओं के शांति बलिदानों की ओर मैं नहीं देखता'' (Amos 5:22)। बल्कि सच्ची श्रद्धा से अर्पित दो पैसे भी ईश्वर को कबूल है। मन चंगा, तो कटौती में गंगा।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019